United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

हिन्दी साहित्य और वैज्ञानिक अनुसंधान

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. टी. अरुणा कुमारी
सह आचार्या एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग,शासकीय महाविद्यालय [स्वायत्त]
पाल्वंचा, जिला भद्राद्री कोत्तगूडेम
arunakumari.tata@gmail.com Mobile no. 9440973384

Article Received:09-08-2026 Article Modified:01-09-2026
Article Accepted:12-09-2026 Article Published:17-09-2026
DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.3.127

सार

अनादि काल से साहित्य के क्षेत्र में वैज्ञानिकों का सहयोग एवं भागीदारी सु स्पष्ट है। गहन एवं अमूर्त तत्वों को संश्लेषणात्मक, ज्ञान युक्त साधारण व्याख्या वैज्ञानिक दे सकते हैं। अनादि काल से भारतीय साहित्य के माध्यम से विज्ञान के देन और श्राप दोनों रूपों का विस्तृत चित्रण एवं वर्णन रोचक ढंग से किया गया है। विज्ञान के गूढ़तम रहस्यों को जानकर उन्हें लोक भाषा में लिखकर जन-जन तक आसानी से पहुँचाने का काम साहित्यकार करता है। इसको प्रस्तुत करने में पारिभाषिक शब्दावली युक्त तार्किकता, वस्तुनिष्ठा, स्पष्टता की आवश्यकता होती है जिससे जनता का ज्ञान विस्तृत होता है। हिन्दी साहित्य में कथा, निबंध, जीवनी आदि विधाओं के द्वारा वैज्ञानिक साहित्य का प्रस्तुतीकरण होता आ रहा है।

बीज शब्द : वैज्ञानिक, भारतीय साहित्य, पारिभाषिक शब्दावली

'वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ' (1) राम चरित मानस के बालकांड के प्रथम श्लोक में तुलसी का यह कथन साहित्य के क्षेत्र में वैज्ञानिकों का सहयोग एवं भागीदारी को स्पष्ट करता है। मानव की चिंतनशील मनोवृति के कारण विज्ञान एवं शोध का विकास-विस्तार होता है। विज्ञान तर्कसंगत एवं व्यवस्थित तकनीक के द्वारा नए तथ्यों का आविष्कार करता है। पुराने तथ्यों की परीक्षा करना, उनके अनुक्रम का विश्लेषण करना भी विज्ञान का कर्तव्य है। गहन एवं अमूर्त तत्वों को संश्लेषणात्मक, ज्ञान युक्त साधारण व्याख्या वैज्ञानिक दे सकते हैं। तर्क और विश्लेषण के माध्यम से ही व्यक्त-अव्यक्त या प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष का ज्ञान प्राप्त होता है, जिसके बिना मानव की जीवनयात्रा असफल होता है। पहिया का आविष्कार मानव परिणाम का अति उत्तम या पहला कदम है। तब से लेकर आज तक जितने भी आधुनिक खोज किए गए हैं उनमें मानव विकास के साथ-साथ विनाश के भी अंकुर निक्षिप्त हुए हैं। अनादि काल से भारतीय साहित्य के माध्यम से विज्ञान के देन और श्राप दोनों रूपों का विस्तृत चित्रण एवं वर्णन रोचक ढंग से किया गया है। आदिकालीन वीर गाथाओं में युद्ध वर्णन के सिद्धहस्त कवि रथ निर्माण, अश्व पालन, भिन्न हथियारों की तैयारी आदि पर विशेष ध्यान देते हुए दिखाई देते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्ण युग

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

भक्ति कालीन साहित्य में अनेक वैज्ञानिक रहस्य छुपे हुए हैं। दार्शनिक विचारों की वैदग्धता संत साहित्य में मुखरित हुई है।

विज्ञान के गूढ़तम रहस्यों को जानकर उन्हें लोक भाषा में लिखकर जन-जन तक आसानी से पहुँचाने का काम साहित्यकार करता है। आदिम युग से लेकर आज तक मानव की जिज्ञासा वैज्ञानिक खोज का आधार माना जाता है। स्वयं के पांच इंद्रियों द्वारा अनुभूत सभी वस्तु, पदार्थ एवं भावनाओं के मूल आधार को समझना वैज्ञानिकों का काम है। उनमें दिखाई देने वाले अनावश्यकता को निकलना, सामाजिक हित एवं व्यक्तिगत सुविधा के लिए आवश्यक सुधार लाने के लिए प्रयास एवं प्रयोग करना वैज्ञानिक खोज या अनुसंधान माना जाता है। इनका विकासात्मक प्रस्थान एवं विवरणात्मक गतिविधियों एवं इतिहास को साहित्य अनेक रूपों में प्रस्तुत करने का काम करता है। विषय का अवलोकन करते हुए परीक्षण करना, उसका विश्लेषण करके वस्तुनिष्ठ ज्ञान को प्रदर्शित करने की प्रक्रिया वैज्ञानिक खोज है।

विज्ञान से संबंधित खोज, अनुसंधान एवं विचार आदि को स्पष्ट एवं सरल भाषा में प्रस्तुत करना वैज्ञानिक साहित्य कहलाता है। इसको प्रस्तुत करने में पारिभाषिक शब्दावली युक्त तार्किकता, वस्तुनिष्ठा, स्पष्टता की आवश्यकता होती है जिससे जनता का ज्ञान विस्तृत होता है। हिन्दी साहित्य में कथा, निबंध, जीवनी आदि विधाओं के द्वारा वैज्ञानिक साहित्य का प्रस्तुतीकरण होता आ रहा है। पहले अनूदित सामग्री के रूप में वैज्ञानिक साहित्य का विकास होता था। बाद में मौलिक साहित्य का विस्तृत सृजन किया गया है। इसमें प्राकृतिक घटनाओं के बीच संबंधों को अनुमानित करते हैं। कुछ आंकड़ों को संग्रहित करके उसका विश्लेषण करते हैं, जो वैज्ञानिक प्रगति को उन्नति मार्ग पर ले चलते हैं। पूर्व निर्मित सूचनाओं, सिद्धांतों का व्याख्यान नए निष्कर्ष एवं सूचनाओं के आधार पर करना भी वैज्ञानिक खोज है।

कुछ स्वार्थी व्यक्ति मानते हैं कि प्रकृति को अपने वश में करना ही वैज्ञानिक प्रगति का लक्षण है, पर प्रकृति और मानव के संबंध पर किए गए खोज से पता चलता है कि मानव को खुश, संतुष्ट, तृप्त एवं पूर्ण रहना हो तो अन्य जीवों की तरह उसे भी प्राकृतिक नियमों का पालन करना होगा। विख्यात अंग्रेजी कवि *टेनिसन* के अनुसार प्रकृति कहती है "Men may come and go. But I go on forever". अर्थात प्राकृतिक निरंतरता ही असली सत्य है। अनेक भारतीय दार्शनिकों का मानना है कि प्रकृति की शाश्वत स्वरूप को परखना सबसे प्रमुख वैज्ञानिक खोज है।

खोज या अनुसंधान में तथ्यों को खोजने और प्रमाणित करने की उत्सुकता होती है। शायद कभी इसमें नीरसता भी उत्पन्न हो सकता है। लेकिन शाश्वत सत्य जो पहले से मौजूद है या अनादि है उसको पहचाना सर्वोपरि अनुसंधान है।

विज्ञान के दो विभाग हैं मूर्त विज्ञान एवं अमूर्त विज्ञान। वृक्ष, जीव जंतु या जैविक, रसायन, भौतिक शरीर विज्ञान आदि मूर्त या औपचारिक विज्ञान शाखा के अंतर्गत चर्चित हैं। समाज या सामाजिक विज्ञान अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, दार्शनिकशास्त्र, धार्मिकशास्त्र, मनोविज्ञान, सांस्कृतिक व्यवहार आदि को अमूर्त या अनौपचारिक विज्ञान के अंतर्गत चर्चित करते हैं। इनके अंतः संबंध एवं अंतः क्रियाओं के कारण कभी मूर्त अमूर्त का और अमूर्त मूर्त का रूप धारण करता है। इस आधार पर साहित्य और विज्ञान का संबंध अन्योन्याश्रित मान सकते हैं। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है तो सामाजिक गतिविधियों के आधार पर वैज्ञानिक खोज एवं अनुसंधान का प्रारूप निर्धारित रहता है। सामाजिक परिवर्तनों का चिट्ठा साहित्य की पेटी में सुरक्षित रहता है तो वैज्ञानिक अनुसंधान का मूल आधार सामाजिक सूत्रों से ही प्राप्त होते हैं।

हमें इस बात पर गौर करना चाहिए कि ऋषि मुनियों के सर्वाधिक आविष्कारों का साहित्यिक रूप है 'वेदविज्ञान'। न केवल मानवीय बल्कि पूरे वैश्विक कल्याण के लिए वेदविज्ञान के अंतर्गत ऋषि मुनियों के द्वारा किए

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

गए अनेक आविष्कारों को सूत्रों के रूप में बांधकर प्रस्तुत किया गया है। दंतधावन से लेकर निद्रा तक, ग्रह, नक्षत्र-कृष्णबिल से लेकर सागर गर्भित रत्न राशियों के तक के सर्वविज्ञानकोश हैं वेद। वैदिक सूत्रों का निर्माण एवं पालन प्रकृति के अनुकूल होता है जो सबके विकास का मार्ग दर्शक है। शास्त्रीय अध्ययन के जितने भी आधुनिक शाखाएं आज मौजूद हैं उनके बीज वेदों में निक्षिप्त हैं। वह अतुल्य साहित्य न केवल भारतीयों का बल्कि पूरे मानव समाज का धरोहर है।

प्राचीन वैज्ञानिक प्रयोग में अनेकानेक आधुनिक विकासन की मूल भावनाएं सुनिश्चित व्यक्त हुए हैं जैसे महाभारत में *आचार्य द्रोण* 'कुंभ संभव' कहलाते थे। वैसे ही देखा गया है कि महर्षि व्यास ने गांधारी के विच्छिन्न गर्भ को घड़ों में रखकर कौरवों की प्राण रक्षा की, जहाँ तक आधुनिक विज्ञान अभी पहुंच नहीं पाया। अस्त्र मंत्राधीन होते हैं, इनकी साधना करनी पड़ती है तभी ये किसी के वश में रहते हैं अर्थात आधुनिक भाषा में इन्हीं को 'फार्मूला' कह सकते हैं जिनको 'अप्लाई' करने पर आवश्यक फल मिलता है। आग्नेयास्त्र अग्नि को व्याप्त करता है, वायुव्यास्त्र झंझा का उत्पादन करता है, वारुणास्त्र पानी को बरसाता है। अर्थात प्राकृतिक शक्तियों का असीम या केंद्रीकृत विनिमय अस्त्र हैं। इसलिए ऐसे रहस्यमय विद्या कोई गिने-चुने व्यक्तियों को ही दी जाती थी, जो इनका विनिमय जगत-रक्षा मात्र केलिए करे न कि राक्षस बनकर विश्व नाश कर बैठे। अर्थात वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा उत्पन्न शक्ति उत्तम व्यक्तियों को उनकी योग्यतानुसार प्रदत्त करना ही मानवीय समाज के लिए आवश्यक एवं उपयोगी है अतः अनुसंधानकर्ता कवि एवं गुरु अपने सूझ एवं सोच को साहित्य के माध्यम से ही प्राप्त कराते हैं।

मानस तो वैज्ञानिक प्रतिष्ठापना का मूल चरण है। बाण कितने परक के हो सकते हैं, उनका प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए, उनके प्रयोग का फल कैसे होगा,,, आदि अनेक उदाहरण इस महान ग्रंथ में भरे पड़े हैं।

बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा(2)

मानस में जीव विज्ञान, वायुयान चालान विज्ञान, रसायन विज्ञान, औषधि विज्ञान, निर्माण संबंधी विज्ञान, न्याय शास्त्र, भौतिक विज्ञान, भौगोलिक विज्ञान आदि की भी चर्चा की गई है। *पावक कर सुबाहु पुनि मारा।अनुज निसाचर कटहु संघारा(3)*

अर्थात *सुबाहु* अग्नि को अपना औजार बनाकर फेंका। वे तो रक्त, मज्जा, मांस, हड्डियाँ आदि को अपना औजार बनाकर फेंकते थे।

आधुनिक युग में जिसको आय.वी.एफ. के नाम से जानते हैं, पुत्रकामी दशरथ की इष्टि से जो हविष्यान्न प्राप्त हुआ वह इसका पूर्व रूप मान सकते हैं। तुलसीदास कृत हनुमान चालीसा में सूर्य और भूमि के दूर को नापने की विधि *'युग सहस्त्र योजन पर भानु'* से ले सकते हैं जो अंतरिक्ष विज्ञान संबंधित विषय है। रीतिकालीन साहित्य में भी समाज विज्ञान, साहित्यपरक लक्षण ग्रंथों की रचना की गई है इनमें कवि प्राचीन सिद्धांतों का पुनर्विमर्श नए सूत्रों के आधार पर करते रहे, जो वैज्ञानिक विश्लेषण की एक रीति है। कारीगरों की कर्मनिष्ठा एवं उनकी कल्पना शीलता को दरबारी कवि नए अंदाजे से चित्रित करते रहे। नृत्य, संगीत, स्थापथ्य कला में विलासी राजाओं को संतुष्ट करने जितने भी नए-नए आविष्कार किए गाए हैं, श्रृंगार काल के साहित्य में डूब कर हम खोद सकते हैं।

रितिकालीन कवि बिहारी के साहित्य में ज्योतिषविज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गणित विज्ञान, नीति विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, प्रकृति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि अनेक भौतिक एवं अभौतिक विज्ञानों का समावेश पाया जाता है। बिहारी आयुर्वेद शास्त्र के नियम को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि

'जरी विषम जुर जाइये आप सुदरसन देहु' (4)

अर्थात विषम ज्वर से पीड़ित व्यक्ति को *'सुदर्शन चूर्ण'* देने का संकेत है। राजनीति में '*हरावल'* का उल्लेख करते हैं जो मुख्य सेना की सुरक्षा के लिए आगे आगे भेजे जाने वाली सेना। जिससे उनकी सेना-नियमों की

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

जानकारी प्राप्त होती है। बिहारी *स्वामी, मंत्री, कोष, मित्र, राष्ट्र, दुर्ग और बल* को राजा के सात अंग मानते हैं। अपने एक दोहे में

कहत सबैं बेंदी दियें आँकु दस गुनौ होतु। (5)

कहकर गणित शास्त्र में शून्य या बिंदी को दिए गए महत्व स्पष्ट किया है।

केशव ने विज्ञान गीता के द्वारा विभिन्न विषयों की चर्चा की। युगीन परिवर्तनों, परिणामों को लिपिबद्ध करता हुआ कवि या साहित्यकार वैज्ञानिक उद्भावना से अनभिज्ञ नहीं रह सकता। वह अपने साहित्य को प्रस्तुत करने के लिए विज्ञान का सहारा लेता है और विज्ञान के मानक प्रवृत्तियों का स्पष्टीकरण भिन्न-भिन्न छंदों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

पाश्चात्य सिद्धांतों से भारतीय-- विशेषकर हिन्दी साहित्य अनवरत प्रभावित होता रहा। अस्तित्व वाद, सौंदर्यवाद, दु:खवाद -- जो हिन्दी एवं भारतीय साहित्य में दोष माना जाता था उसका भी वर्णन कवि लेखकों ने विशुद्ध भारतीयता के माध्यम से किए थे। हर युग में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों ने सामाजिक बदलाव की मांग की। फलतः जनता के लौकिक एवं अलौकिक जीवन में समूल परिवर्तन हो रहे थे।

लोग अपने परंपरागत हिन्दू धर्म को छोड़कर कभी जोर जबरदस्ती से, कभी अवसरगत होकर, कभी स्व इच्छा से बौद्ध, जैन, क्रिश्चियन, इस्लाम आदि धर्मों का पालन करने लगे। उनके दैनिक जीवन में संभावित परिणामों का लेखा-जोखा, कथा-वार्ता ------ काव्य, कविता, नाटक, निबंध, आत्मकथा, एकांकी, जीवनी आदि अनेक साहित्यक विधाओं के मध्य प्रचलित होने लगा। अस्त्र साधना एवं शस्त्र निर्माण विधि, युद्ध से संबंधित उपकरणों की तैयारी, युद्ध व्यूह रचना, कूटनीतिज्ञता आदि का विस्तृत वर्णन रामायण, महाभारत, भागवत से लेकर आदिकालीन एवं रीतिकालीन वीर काव्यों में निक्षिप्त है, जो आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए एक 'रेफरेंस' अवश्य है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारतीय समाज में चेतनता लाने का काम, जागृति पैदा करने का काम विशेषज्ञों ने ली। वे जानते थे कि स्वेच्छा प्राणी मानव किसी के प्यार में बंदी हो सकता है बंधन में नहीं। इस अवसर पर मानवीय अपराजिता चेतना को जागृत करने में भी साहित्य ने विज्ञान की सहारा ली। कलम-कागज किताब लेखन के औजारे हैं तो तकनीकी औजार मुद्रण यंत्र का खोज साहित्यक संसार के लिए अपूर्व वरदान है। मुद्रण क्रांति के द्वारा मात्र कागज नहीं बल्कि क्रांति की ज्वालामुखी जनता के मन मस्तिष्क में फूट पड़ी। फलतः भारत में अंग्रेजों से प्रतिशोध की भावना का प्रोत्साहन मिला कुछ रचनाकर्मी मात्र अपने राजकीय हक अदा करने की ओर ही इशारा करते रहे। विश्व में आदर्श स्थापित करने वाला यह महान युद्ध भारत को आजाद खाद्य कर दिया।

साइकिल से लेकर रेलगाड़ी, हवाई जहाज तक की वैज्ञानिक प्रगति दुगनी तेजी से दौड़ती रही तो मानव उसके साथ-साथ कदम चलाता हुआ आगे बढ़ा। मरने मारने की विधि आज बहुत आसान हो गई है। कारतूस, तोप, बम के साथ-साथ आज परमाणु या जैविक औजारों का इस्तेमाल बाएं हाथ का खेल बन गया है। लुप्त होती संवेदनशीलता एवं सहानुभूति को वापस लाने पर ही मानव का अस्तित्व शाश्वत रहता है, वरना वह भावना मात्र रह जाता है।

आधुनिक युग तक आते-आते वैज्ञानिक आविष्कार असीमित एवं अनगिनत हो रहे हैं। लगता है कि जल, वायु, भूमि से लेकर सारा पर्यावरण एवं सभी जीव जंतु वैज्ञानिक खोज के जाल में फंसकर विकास के नाम पर विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं, तो कभी-कभी कुछ आविष्कार इन्हें रक्षा कवच पहनाकर संरक्षित करते हुए सामने आते हैं। खाद्य पदार्थ, यातायात के साधन, स्वास्थ्य वर्धन, नौकरी, शिक्षा, धार्मिक विचार, आर्थिक नियंत्रण, वाणिज्य-व्यापार, अरोगता आदि क्षेत्रों में आधुनिक आविष्कारों का प्रभाव अत्यधिक है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ना, केक-बिस्कुट खाना, प्राचीन पद्धतियों का अवहेलना करते हुए उन्हें तिरस्कृत करना, शेयर मार्केट, पैसों को सर्वाधिक

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

महत्व देना, आदि सामाजिक परिणामों से मानव जीवन एवं साहित्य संरचना में आमूल परिवर्तन हुए। गुरुकुल के स्थान पर आधुनिक विद्यालयों का निर्माण हुआ, जहाँ शिक्षा-शिक्षण से ज्यादा नियम कायदे के पालन पर ध्यान अधिक है। व्यक्तिगत विकास के स्थान पर सामूहिक पढ़ाई को बल मिला, अंतिम फल कौशल विहीन छात्र, असफल मानसिकता मात्र है।

मनोरंजन के क्षेत्र में नाटक, एकांकी के स्थान को सिनेमा एवं दूरदर्शन ने हड़प लिया। यह वैज्ञानिक आविष्कारों का ही परिणाम है कि अनेक साहित्यकार पटकथा लेखक और निदेशक बने और कुछ कवि गीतकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। कुछ कहानियाँ और नाटकों के आधार पर सिनेमा का निर्माण हुआ जैसे प्रेमचंद की सद्गति कहानी। आजकल तो यू ट्यूब, वाईस रिकार्डर, इंस्टा आदि में कहानियों को अति साधारण व्यक्ति भी 'वीडियो' के रुप में प्रदर्शित कर रहे हैं। जिसे वैज्ञानिक आविष्कारों का समाजीकरण या साधारणीकरण मान सकते हैं।

वैज्ञानिक विषयों, सूत्रों की लेखन परंपरा बहुत पुरानी है। भारतीय साहित्यकार आयुर्वेद, स्वास्थ्य, व्याकरण आदि का लेखन बहुमूल्य ग्रंथों के रूप में करते आए हैं। अर्थात साहित्य और विज्ञान का संबंध बहुत गहरा है। तकनीकी विधियों और आविष्कारों से मानव समाज और भविष्य पर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट करता है वैज्ञानिक साहित्य। इसमें विशेष रूप से प्राथमिक स्तर द्वितीयक स्तर और तृतीयक स्तर हैं। प्राथमिक स्तर में पेटेंट, तकनीकी रिपोर्ट, आंकड़े, सॉफ्टवेयर आदि को रख सकते हैं, तो द्वितीय स्तर के साहित्य में पुनरीक्षण लेखन को प्रस्तुत करते हैं। तृतीय स्तर के साहित्य में विश्व कोश आदि का स्थान निर्धारित किया जाता है। बंगाली भाषा में विज्ञान साहित्य के प्रथम लेखक के रूप में *जगदीश चंद्र बोस* प्रसिद्ध हैं। विज्ञान कथा के नाम पर कुछ यथार्थ और कुछ काल्पनिक तथ्यों के आधार पर लेखन कार्य करते रहे। इसको हिन्दी साहित्य के एक विधा के रूप में स्वीकारते थे।

साहित्य की विस्तृति अनंत है, जिसमें वैज्ञानिक आविष्कार भी समाहित हो जाते हैं। हिन्दी साहित्य में विज्ञान कथा परंपरा का आरंभ *बाबू केशव प्रसाद सिंह* के 'चंद्रलोक की यात्रा' से माना जाता है। वैज्ञानिक कथा में सत्य का निर्धारण कल्पना में पिरोकर मनोरंजन के साथ व्यक्त किया जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक लेखों में वैचारिकता एवं सर्जनात्मकता भी पाया जाता है। जब आधुनिकता को परंपरा की समझ के साथ आगे बढ़ना है तभी विकास का सही मतलब निकलता है। 'सूरज-चाँद-सितारे', 'सूर्य', 'आकाश दर्शन' आदि पुस्तकों के द्वारा *गुणाकर मुले* खगोल विज्ञान संबंधित विषयों का सरल प्रस्तुतीकरण किया। *बीता हुआ भविष्य* -सं. बाल फोंडके, *प्रतिनिधि बाल विज्ञान कथाएँ* -सं जाकिर अली रजनीश, *विज्ञान बाल कथाएँ* - सं रमाशंकर आदि अन्य संकलित रचनाएँ विज्ञानिक साहित्य के अंतर्गत गिने चुने हैं। जयंत विष्णु नार्लीकर, ओम प्रकाश काश्यप, देवेंद्र मेवाड़ी, अंबिका दत्त व्यास, डॉ. राजीव रंजन उपाध्याय, राजीव गर्ग आदि रचनाकार अपने कलम के माध्यम से विज्ञान के जटिल विषयों को आम जनता के लिए रोचक एवं सरल बनाया।

आज विशेष प्रकार के वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं में वैज्ञानिक अनुसंधान से संबंधित सूचना प्रकाशित हो रही है। फिर भी आधुनिक समय में कुछ आलोचक विज्ञान कथाओं में मौलिकता की कमी, स्पष्ट एवं शुद्ध मानकीकृत शब्दावली की कमी की ओर इशारा करते हैं। आशा है कि वैज्ञानिक साहित्य का संपूर्ण लेखा-जोखा हिन्दी साहित्य में अनवरत रहे।

उद्धरण

(1) श्रीमद गोस्वामी विरचित श्री राम चरित मानस - टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार - बाल कांड - पृ. 198 - गीता प्रेस, गोरखपुर

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-3 ;July, Aug & Sept),2026

(2) श्रीमद गोस्वामी विरचित श्री राम चरित मानस - टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार - बाल कांड - पृ. 208 - गीता प्रेस, गोरखपुर

(3) श्रीमद गोस्वामी विरचित श्री राम चरित मानस - टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार - बाल कांड - पृ. 208 - गीता प्रेस, गोरखपुर

(4) हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि - डॉक्टर द्वारका प्रसाद सक्सेना – पृ.307- विनोद पुस्तक मंदिर – आगरा

(5) हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि - डॉक्टर द्वारका प्रसाद सक्सेना – पृ.307- विनोद पुस्तक मंदिर - आगरा

संदर्भ

- हिन्दी के सुप्रसिद्ध बाल गीत
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र
- इंटरनेट में लभ्य मुक्त स्रोत